Dr. Jitendra Kumar Bairwa
(Asst. Prof. Political Science)

B.A. Part I

(*Political Science*) PAPER –I[st]

राजनीति विज्ञान के मूल आधार

प्रश्न– परम्परागत दृष्टिकोण के अनुसार राजनीति विज्ञान की परिभाषा देते हुए इसका क्षेत्र व परम्परागत व आधुनिक दृष्टिकोण में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– परम्परागत दृष्टिकोण में राजनीति विज्ञान को चार अर्थों में परिभाषित किया है जो निम्न है :–

1. राज्य के अध्ययन के रूप में
2. सरकार के अध्ययन के रूप में
3. राज्य और सरकार के अध्ययन के रूप में
4. राज्य सरकार और व्यक्ति के अध्ययन के रूप में

परम्परागत दृष्टिकोण का क्षेत्र :– जो निम्न है

1. मानव को राजनीतिक जीवन का अध्ययन
2. राज्य का अध्ययन
3. सरकार का अध्ययन
4. स्थानीय एवं राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन
5. राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन
6. अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष का अध्ययन
7. राजनीतिक दलों व दबाव समूहों का अध्ययन
8. राजनय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विधि का अध्ययन

परम्परागत और आधुनिक राजनीति विज्ञान में अन्तर :– जो निम्न है :

1. परिभाषा संबंधी अन्तर
2. विषय क्षेत्र संबंधी अन्तर
3. प्रकृति के संबंध में अन्तर
4. अध्ययन पद्धतियों के सम्बन्ध में अन्तर
5. मूल्यों के सम्बन्ध में अन्तर
6. उद्देश्यों के सम्बन्ध में अन्तर

प्रश्न– आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार राजनीति विज्ञान की परिभाषा बताइये।

उत्तर– परिभाषा निम्न है –

1. राजनीति विज्ञान मानवीय क्रियाओं का अध्ययन है।
2. राजनीति विज्ञान शक्ति का अध्ययन है
3. राजनीति विज्ञान राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन है
4. राजनीति विज्ञान निर्णय प्रक्रिया का अध्ययन

प्रश्न– आधुनिक राजनीति विज्ञान की कोई चार प्रमुख विशेषताए बताइए?

उत्तर– 1. वैज्ञानिकता
2. मूल्य विहीनता
3. अन्तर अनुशासनात्मक
5. यथार्थवादी अध्ययन

प्रश्न– व्यवहारवाद के उदय के कारण व मान्यतायें बताते हुए इसकी आलोचना का वर्णन कीजिए।

उत्तर– व्यवहारवाद के उदय के कारण :–

1. परम्परागत अध्ययन पद्धतियों के प्रति असन्तोष
2. अन्य सामाजिक विज्ञानों से प्रेरणा
3. द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव
4. नवीन अध्यन पद्धतियों का प्रयोग

व्यवहारवाद की मान्यताएँ – 8 मान्यताएँ है जो निम्न है :

1. नियमन
2. सत्यापन
3. तकनीकी प्रयोग
4. परिमाणनीकरण
5. मूल्य निर्धारण
6. व्यवस्था वृद्धीकरण
7. विशुद्ध ज्ञान
8. समग्रता

आलोचना : –

1. अत्यधिक शब्दाडम्बर
2. राजनीतिक व्यवहार की धारणा गलत
3. पद्धतियों पर अत्यधिक बल
4. मूल्य निरपेक्षता संम्भव नही
5. अत्यधिक खर्चीली पद्धति
6. अन्य पद्धतियों के महत्व को नकारना
7. राजनीति विज्ञान विशुद्ध विज्ञान नही
8. सूक्ष्म अध्ययन के निष्कर्षों की वृहत् स्तर पर लागू करने की समस्या

प्रश्न– 5. उत्तर व्यवहारवाद की कोई चार विशेषताएँ बताइए?

उत्तर– 1. प्रविधि से पूर्व सार विषय
2. सामाजिक परिवर्तन पर बल
3. मूल्यों की महत्वपूर्ण भमिका
4.समस्याओं के विश्वसनीय निदान की आवश्यकता

प्रश्न– उत्तर व्यवहारवाद के दो सिद्धान्त बताइए।

उत्तर– 1. शोध की सार्थकता या प्रासंगिता
2. क्रियात्मकता या कर्म

प्रश्न– सत्ता से आप क्या समझते है? इसके स्त्रोत, पालन के आधार व सीमाएं बताइए।

उत्तर– सत्ता आदेश देने का अधिकार और आदेश का पालन करवाने की शक्ति है।

सत्ता के स्त्रोत :–

1. परम्परागत
2. बौद्धिक कानूनी या वैधानिक
3. करिशात्मक सत्ता

पालन के आधार :–

1. विश्वास
2. दबाव
3. एकरूपता
4. वैधानिकता

सीमाएं

1. प्राकृतिक
2. नैतिक–धार्मिक
3. संस्कृति
4. संविधान नियम और उपनियम
5. आर्थिक
6. अधीनस्थो की क्षमताएं और अधीनस्थों द्वारा निर्मित संघ
7. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय कानून

प्रश्न– शक्ति के प्रमुख स्त्रोत बताइए।

उत्तर– 1. ज्ञान 2. प्राप्तियाँ
3.संगठन 4. आकार

प्रश्न– औचित्यपूर्णता की तीन प्रमुख विशेषताएं बतलाइए।

उत्तर– 1. औचित्यपूर्णता शक्ति को सत्ता में परिवर्तित करने का गुण
2. किसी व्यववस्था का औचित्य सम्बन्धित लोगों के मूल्यों पर निर्भर करता है।
3. औचित्यपूर्णता विशाल सामाजिक स्वीकृति पर आधारित है।

प्रश्न– राजनीतिक विकास क्या है? इस सम्बन्ध में लूसियन पाई द्वारा व्यक्त विचारों का वर्णन करते हुए इसके साधन बताइये।

उत्तर– राजनीतिक विकास, संस्कृति का विसरण और जीवन के पुरान प्रतिमानों को नयी मांगो के अनुकूल बनाने, उन्हें उनके साथ मिलाने या उनके साथ सामंजस्य बिठाने की प्रक्रिया है।

लूसियन पाई के प्रमुख विचार निम्न है :–

1. राजनीतिक विकास आर्थिक विकास की राजनीतिक पूर्व शर्त के रूप में।
2. औद्योगिक समाजों के लिए विशिष्ट राजनजीति के रूप में राजनीतिक विकास
3. राजनीतिक आधुनिकीकरण के रूप में राजनीतिक विकास
4. राष्ट्रीय राज्य के व्यवहार के रूप में राजनीतिक विकास
5. प्रशासकीय और वैज्ञानिक विकास के रूप में राजनीतिक विकास
6. बहुसंख्यक जन–समुदायक के योगदान के रूप में राजनीतिक विकास
7. लोकतंत्र के निर्माण के रूप में राजनीतिक विकास
8. स्थायित्व और व्यवस्थित परिवर्तनों के रूप में राजनीतिक विकास
9. गतिशीलता और शक्ति के रूप में राजनीतिक विकास
10. सामाजिक परिवर्तन को बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में राजनीतिक विकास

राजनीतिक विकास के साधन :–

1. क्रांतिकारी राजनीतिक नेता
2. राजनीतिक दल
3. सेना
4. आधुनिक नौकरशाही का विकास
5. राष्ट्र भावना का विकास
6. लोकप्रिय राजनीतिक सहभागिता का विस्तार

प्रश्न– लुसियन पाई ने राजनीतिक विकास के तीन लक्षण क्या बतलाए है?

उत्तर– 1. समानता 2. क्षमता
3. विभेदीकरण

प्रश्न– राजनीतिक आधुनिकीरण के तीन प्रमुख लक्षण बताइए।

उत्तर– 1. बुद्धिसंगत सत्ता
2. विभिन्नीकृत राजनीतिक संरचना
3. राजनीतिक सहभागिता

प्रश्न– लोकतंत्र को परिभाषित कीजिए। इसकी विशेषता व गुण–दोषों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– जब जनता शासन कार्य में स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से भाग लेती है तथा शासन जनता के हितों के लिए कार्य करता है तो वह व्यवस्था लोकतंत्र कहलाती है।

अब्राहम लिंकन के अनुसार–''लोकतंत्र जनता के लिए जनता के द्वारा जनता का शासन है।''

विशेषताए :–

1. लोक प्रभुता में विश्वास
2. राजनीतिक और नागरिक समानता
3. राजनीतिक और नागरिक स्वतंत्रता
4. व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्मान और गौरव
5. मानवीय विवेक में विश्वास

6. बहुमत शासन
7. शक्ति विभाजन और न्यायपालिका की स्वतंत्रता
8. संविधानवाद

लोकतंत्र के गुण :–

1. जनकल्याण की साधना
2. सर्वाधिक कार्यकुशल प्रशासन
3. सार्वजनिक शिक्षण
4. जनता का नैतिक उत्थान
5. देश भक्ति का स्त्रोत
6. क्रांति से सुरक्षा
7. समानता और स्वतंत्रता पर आधारित
8. विश्व–शांति का समर्थन
9. विज्ञान का श्रेष्ठ प्रोत्साहन

लोकतंत्र का दोष :–

1. अयोग्यता की पूजा/मूर्खों का शासन
2. भ्रष्ट शासन–व्यवस्था
3. दल प्रणाली का अहितकर प्रभाव
4. सार्वजनिक धन और समय का अपव्यय
5. लोकतांत्रिक समानता एक भ्रम
6. अनुत्तरदायी शासन
7. मतदाताओं की उदासीनता
8. पेशेवर राजनीतिज्ञों का विकास
9. युद्ध और संकट के समय निर्बल

प्रश्न– तानाशाही या अधिनायकवाद का आशय क्या है?

उत्तर– तानाशाही का आशय एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के शासन से है जो राज्य से सत्ता पर बलपूर्वक अधिकार कर लेते है और उसका असीमित रूप में प्रयोग करते हैं।

प्रश्न– लोकतंत्र की सफलता हेतु चार आवश्यक परिस्थितियां बतलाइए।

उत्तर– 1. नागरिकों का नैतिक उत्थान
2. शिक्षित एवं जागरूक जनता
3. आर्थिक समानता
4. स्वस्थ और सुदृढ राजनीतिक दल

प्रश्न– राजनीतिक दल को परिभाषित करते हुए इनके कार्य व गुण–दोष का वर्णन कीजिए।

उत्तर– राजनीतिक दल ऐसे लोगों का एक समूह होता है जो किसी ऐसे सिद्धान्त के आधार पर, जिस पर वे एकमत हों, अपने सामूहिक प्रयत्नों द्वारा जनता के हित में काम करने के लिए एकता में बंधे होते है।

राजनीतिक दलों के कार्य :–

1. सार्वजनिक नीतियों का निर्धारण
2. शासन का संचालन
3. शासन की आलोचना
4. चुनावों का संचालन
5. लोकमत का निर्माण
6. शासन तथा जनता के बीच मध्यस्था का कार्य
7. राजनीतिक प्रशिक्षण
8. सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य करना
9. दलीय कार्य करना

राजनीतिक दलों के गुण :–

1. मानवीय स्वभाव के अनुकूल
2. लोकतंत्र के लिए आवश्यक
3. शासन को दृढ़ता प्रदान करना
4. सार्वजनिक शिक्षा का साधन
5. शासन की निरंकुशता पर नियंत्रण
6. श्रेष्ठ कानूनों का निर्माण
7. शासन के विभिन्न अंगों में समन्वय और सांमजस्य
8. विभिन्न मतों का संगठन
9. राष्ट्रीय एकता का साधन
10. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास

दोष :–

1. लोकतंत्र के विकास में बाधक
2. राष्ट्रीय हितों की हानि
3. शासन कार्य में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों की उपेक्षा
4. भ्रमात्मक राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना
5. जनता में मतभेदों को प्रोत्साहन
6. राजनीति में भ्रष्टाचार
7. समय और धन का अपव्यय
8. राजनीतिक दलों में सत्ता का केन्द्रीकरण

प्रश्न– दबाव समूह क्या है?

उत्तर– सार्वजनिक नीति और कार्यों को प्रभावित करने के उद्देश्य से निर्मित गैर सरकारी समूह।

प्रश्न– दबाव समूहों द्वारा अपनाये जाने वाले चार तरीके बताइए।

उत्तर– 1. आंकड़े प्रकाशित करना
2. गोष्ठियां आयोजित करना
3. रिश्वत–बेईमानी तथा अन्य उपाय
4. न्यायालय की शरण

प्रश्न– राजनीतिक दलों के चार निर्माणक तत्व बताओं।

उत्तर– 1. संगठन
2. सामान्य सिद्धान्तों की एकता
3. राष्ट्रीय हित
4. संवैधानिक साधनों में विश्वास

प्रश्न– व्यवस्थापिका का अर्थ, कार्य व इसके पतन के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर– सरकार के तीनों ही अंगों द्वारा महत्वपूर्ण कार्य किये जाते है लेकिन इन तीनों में व्यवस्थापन

विभाग सार्वधिक महत्वपूर्ण है। व्यवस्थापन विभाग ही उन कानूनों का निर्माण करता है जिनके आधार पर कार्यपालिका शासन करती है और न्यायपालिका न्याय प्रदान करने का कार्य करती है। इस प्रकार व्यवस्थापिक, कार्यपालिका और न्यायपालिका के कार्य के लिए आवश्यक आधार प्रदान करती है और इन दोनो विभागों के कार्यों का मार्ग निश्चित करती है व्यवस्थापन विभाग केवल कानूनों का ही निर्माण नहीं करता, वरन् प्रशासन की नीति भी निश्चित करती है और संसदात्मक शासन–व्यवस्था में तो कार्यपालिका पर प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण भी रखता है संविधान में संशोधन का कार्य भी व्यवस्थापन के द्वारा ही किया जाता है अतः यह कहा जा सकता है कि व्यवस्थापन विभाग सरकार के दूसरे दो अंगों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

व्यवस्थापिका के कार्य :–

1. कानून–निर्माण सम्बन्धी कार्य
2. संविधान–संशोधन का कार्य
3. विमर्शात्मक कार्य
4. राष्ट्रीय वित्त पर नियंत्रण
5. प्रशासन पर नियंत्रण
6. न्याय सम्बन्धी कार्य
7. निर्वाचन सम्बन्धी कार्य
8. समितियों और आयोगों की नियुक्ति
9. जन–भावनाओं की अभिव्यक्ति

व्यवस्थापिका का पतन या ह्रास :–

1. कार्यपालिका के कार्यों में अभूत पूर्व वृद्धि
2. प्रदत्त व्यवस्थापन की प्रथा
3. रेडियो और टेलीविजन
4. विशेषज्ञों की परिषदों व समितियों का विकास
5. सेनाओं पर कार्यपालिका का नियंत्रण
6. विदेश सम्बन्धों की प्रधानता
7. सकारात्मक राज्य का उदय
8. बड़े–बडे अनुशासित दलों का विकास
9. व्यवस्थापिका में साधारण योग्यता के व्यक्तियों की भरमार
10. व्यवस्थापिका पर मंत्रिमण्डल का हावी होना।

प्रश्न– कार्यपालिका से आप क्या समझते है इसके कार्य व इसकी शक्तियों में अभिवृद्धि के कारणों को समझाइए।

उत्तर– कार्यपालिका शासन का वह अंग है जो व्यवस्थापिका द्वारा बनाये गये कानूनों का क्रियान्वयन करता है कार्यपालिका के कार्यों पर ही शासन की सफलता निर्भरत रहती है।

कार्यपालिका के कार्य :–

1. प्रशासनिक कार्य
2. कूटनीतिक कार्य
3. विधि–निर्माण सम्बन्धी कार्य
4. न्यायिक कार्य
5. वित्तीय कार्य
6. विविध कार्य

कार्यपालिका की शक्तियों में अभिवृद्धि :–

1. केन्द्रीकरण
2. समाजवाद
3. अन्तर्राष्ट्रीय और गृह संकट
4. नेतृत्व की आवश्यकता
5. संचार तथा आवागमन के साधनों का विकास
6. राजनीति दलों का विकास
7. व्यवस्थापिका की शक्तियों का ह्रास

प्रश्न– बहुल कार्यपालिका किसे कहते है?

उत्तर– बहुल कार्यपालिका का तात्पर्य कार्यपालिका के ऐसे प्रकार से है जिसके अन्तर्गत अन्तिम रूप में कार्यपालिका शक्ति किसी एक व्यक्ति में निहित न होकर व्यक्तियों के एक समुदाय में निहित होती है।

प्रश्न– न्यायपालिका से क्या तात्पर्य है।

उत्तर– न्यायपालिका सरकार का वह अंग है जो कानून भंग करने वालों को दण्ड देती है और व्यक्तियों के आपसी विवादों को हल करती है इसके द्वारा शासक वर्ग को भी अपने सीमाओं में रखा जाता है।

प्रश्न– स्वतंत्र न्यायपालिका का आशय क्या है?

उत्तर– व्यवस्थापिका और कार्यपालिका के नियंत्रण से मुक्त न्यायपालिका को ही स्वतंत्र न्यायपालिका कहा जा सकता है निष्पक्ष न्याय प्रदान करने का कार्य स्वतंत्र न्यायपालिका ही कर सकती है।

प्रश्न– प्रजातांत्रिक समाजवाद से आप क्या समझते है? इसके प्रमुख लक्षणों का परीक्षण करते हुए इसके गुण पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– कार्ल मार्क्स के बाद समाजवाद दो धाराओं में विकसित हुआ हुआ। क्रांतिकारी समाजवाद और विकासवाद समाज। क्रांतिकारी समाजवाद हिंसा में विश्वास करता है विकासवादी समाजवादी शान्तिपूर्ण तरीकों से सामाजिक परिवर्तन चाहता है इसे ही प्रजातांत्रिक समाजवाद कहते है।

लक्षण :–

1. पूंजीवाद का विरोद्ध
2. साम्यवाद का विरोद्ध
3. सामाजिक एवं आर्थिक समानता की धुन
4. सर्वाधिकारवाद का विरोधी
5. उदार प्रजातांत्रिक मूल्यों पर बल
6. राज्य की कल्याणकारी भूमिका पर बल

[J.D.PG. COLLEGE]

7. सकारात्मक स्वतंत्रता पर बल
8. सामाजिक तथा आर्थिक समानता
9. धर्म एवं नैतिकता पर आधारित
10. वर्ग संघर्ष की अपेक्षा वर्ग सामंसस्य पर विश्वास

गुण :–

1. यह व्यक्ति और समाज दोनों के हितों को महत्व देता है।
2. यह पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों के दोषों से बचने का प्रयास है।
3. यह राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता दोनों पर बल देता है।
4. यह विकेन्द्रीकरण पर बल देता है।

प्रश्न– भारत में प्रजातांत्रिक समाजवाद के प्रमुख प्रतिपादकों के नाम बतलाइए।

उत्तर– पं. जवाहर लाल नेहरू, सुभाष बोस, आचार्य नरेन्द्र देव, एम.एन.राय, जय प्रकाश नारायण।

प्रश्न– प्रजातांत्रिक समाजवाद के विरूद्ध चार तर्क दीजिए।

उत्तर– 1. किसी ठोस दर्शन पर आधारित नही
2. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से त्रुटिपूर्ण
3. नौकरशाही का विस्तार
4. वैधानिक और शान्तिमय उपायों से महत्वपूर्ण परिवर्तन सम्भव नही।

प्रश्न– अराजकतावाद क्या है इसके प्रमुख लक्षण व इसकी आलोचना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– अराजकतावाद शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द ''अनारकिया (Anarchia) से हुई है जिसका अर्थ है – शासन का अभाव। अराजकतावाद वह सिद्धान्त है जो राज्य विहीन समाज के संगठन के पक्षपाती है यह दर्शन मूल रूप से राज्य का प्रबल विरोधी एवं अराजकता की स्थिति चाहता है। अराजकतावादी विचारक राज्य, सम्प्रभुता, कानून, सम्पत्ति तथा धर्म को अन्यायपूर्ण संस्थाएं घोषित करता है।

लक्षण तथा सिद्धान्त :–

1. राज्य का विरोध
2. पूंजीवाद का विरोध
3. लोकतंत्र एवं प्रतिनिधि शासन का विरोध
4. निजी सम्पत्ति का विरोध
5. धर्म का विरोध
6. केन्द्रीकरण का विरोध

आलोचना :–

1. अव्यवहारिक व काल्पनिक विचार
2. मानव स्वभाव के बारे में दोषपूर्ण धारणा
3. राज्य सम्बन्धी गलत धारणा
4. अराजकतावादी समाज भी दोषपूर्ण है।
5. स्वतंत्रता की दोषपूर्ण धारणा
6. दोषपूर्ण आर्थिक व्यवस्था
7. धर्म एक घृणास्पद वस्तु नहीं है।
8. क्रांति और हिंसा के परिणाम अच्छे नहीं होते।

प्रश्न– अराजकतावादी शब्द की उत्पत्ति बतलाइए।

उत्तर– अराजकतावादी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द अनारकिया से हुई है। जिसका शब्दिक अर्थ शासन का अभाव है।

प्रश्न– अराजकतावाद तथा साम्यवाद में तीन समानताएं बतलाइए।

उत्तर– 1. राज्य के प्रति विरोध
2. पूंजीवाद का विरोध
3. प्रजातंत्र तथा धर्म का विरोध

प्रश्न– आदर्शवाद की दो प्रमुख धाराएं कौन–सी है।

उत्तर– 1. उग्र आदर्शवाद
2. उदार आदर्शवाद

प्रश्न– विधि के शासन का आशय क्या है?

उत्तर– विधि सर्वोच्च है और कोई भी व्यक्ति विधि के नियंत्रण से बच नही सकता। उच्चतम स्तर के व्यक्ति से लेकर निम्न स्तर के व्यक्ति तक सभी विधि के सम्मुख समान है।

प्रश्न– संविधानवाद का उद्देश्य क्या है?

उत्तर– शासन वर्ग की शक्तियों पर प्रभावी कानूनी नियंत्रण लगाना, ताकि शासक वर्ग मनमाना आचरण न कर सके।

प्रश्न– मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व इतिहास की आर्थिक व्याख्या सिद्धान्त का आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।

उत्तर– **मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद सिद्धान्त :–** द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स के विचारों का मूल आधार है इसके अनुसार विश्व की सभी समस्याओं के समाधान में यह हमारा पथ–प्रदर्शन करता है द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में दो शब्द है – इसमें प्रथम शब्द तो उस प्रक्रिया को स्पष्ट करता है, जिसके अनुसार सृष्टि का विकास हो रहा है और दूसरा तत्व सुष्टि के मूल तत्व को सूचित करता है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विशेषताएँ :– जो निम्न है –

1. द्वन्द्ववाद के अनुसार विश्व स्वतंत्र और असम्बद्ध वस्तुओं का ढेर या संग्रह मात्र नहीं

[J.D.PG. COLLEGE]

है वरन् एक समग्र इकाई है जिसकी समस्त वस्तुएँ परस्पर सम्बद्ध और अन्योन्याश्रित है इसलिए हमारे द्वारा किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से पृथक रूप में नही समझा जा सकता। वस्तु को समझने के लिए हमे वस्तुओं के पारस्परिक सम्बन्ध भी समझने होगें।
2. द्वन्द्ववाद के अनुसार वस्तुओं में विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया सरल नही है।
3. द्वन्द्ववाद के अनुसार प्रकृति अस्थिर, गतिशील और निरन्तर परिवर्तनशील है।
4. वस्तुओं में जो गुणात्मक परिवर्तन होते है वे धीरे–धीरे न होकर शीघ्रता के साथ तथा अचानक होते है।
5. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्राकृतिक जगत की आर्थिक तथ्यों के आधार पर व्याख्या करता है और पदार्थ को सम्पूर्ण विश्व की नियंत्रक शक्ति के रूप में स्वीकार करता है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना :–

1. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अत्यधिक अस्पष्ट
2. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद असंगतिपूर्ण धारणा
3. अत्यधिक भौतिकवाद दर्शन
4. द्वन्द्वात्मक पद्धति दोषपूर्ण
5. द्वन्द्वात्मक पद्धति खतरनाक
6. मानवीय इतिहास उत्थान का ही लेखा नही

इतिहास की आर्थिक व्याख्या या आर्थिक नियतिवाद का सिद्धान्त :–

मार्क्स ने अपनी इस आर्थिक व्याख्या के आधार पर अब तक के और भावी मानवीय इतिहास की 6 अवस्थाएं बतायी है इनमें से प्रथम चार अवस्थाओं से समाज गुजर चुका है और शेष दो अवस्थाएं अब आनी है मानवीय इतिहास की ये 6 अवस्थाएँ इस प्रकार है :–

1. आदिम साम्यवादी अवस्था
2. दास अवस्था
3. सामन्ती अवस्था
4. पूँजीवादी अवस्था
5. श्रमिक वर्ग के अधिनायकत्व की अवस्था
6. साम्यवादी अवस्था

इतिहास की आर्थिक व्याव्या की आलोचना :–

1. आर्थिक तत्व पर अत्यधिक और अनावश्यक बल
2. आर्थिक आधार पर सभी ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या सम्भव नही
3. इतिहास के निर्धारण में संयोग के तत्व की उपेक्षा
4. मानवीय इतिहास के काल क्रम का निर्धारण सम्भव नहीं
5. राजनीतिक सत्ता का एकमात्र आधार आर्थिक सत्ता नही
6. आर्थिक सम्बन्धों को राजनीतिक शक्ति द्वारा बदला जा सकता है।
7. इतिहास की धारणा का राज्यविहीन समाज पर आकर रूकना सम्भव नही।

प्रश्न– कार्ल माक्स की दो सबसे प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर– 1. साम्यवादी घोषणा पत्र
2. मूल्य, कीमत और लाभ

प्रश्न– वर्ग संघर्ष का आशय क्या है?

उत्तर– पूँजीपति और श्रमिकों के हितों में मूलभूत विरोध होने के कारण इसमें संघर्ष अवश्यभावी है संघर्ष की यह प्रक्रिया ही सर्वहारा वर्ग के अधिनायवाद को जन्म देती है।

J.D.P.G. COLLEGE